Unit - V

# विभक्त्यर्थ (कारक) प्रकरणम्

सूत्र

① प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ॥

अर्थ -

जिस शब्द के उच्चारित होते ही जिस पदार्थ का नियम से बोध हो वह प्रातिपदिकार्थ कहलाता है। अभिप्राय यह है कि शब्द से, जिस अर्थ की नियमपूर्वक उपस्थिति होती है, वह प्रातिपदिकार्थ है। सूत्र में 'मात्र' शब्द का प्रत्येक के साथ योग है। इस तरह -

① केवल प्रातिपदिकार्थमात्र - व्यक्ति एवं जाति

② लिङ्ग मात्र - स्त्रीलिङ्ग - पुल्लिङ्ग - नपुंसकलिङ्ग

③ परिमाण मात्र - माप - तोल - वजन

④ वचनमात्र - एकवचन - द्विवचन - बहुवचन

मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। सभी के उदाहरण अलग - अलग आगे दिये जा रहे हैं :-

① प्रातिपदिकार्थमात्र के उदाहरण -

उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्

② लिङ्गमात्र के उदाहरण -

तटः तटी तटम्

③ परिमाणमात्र के उदाहरण -

द्रोणो व्रीहिः

Scanned with CamScanner

(5) वचन मात्र के उदाहरण -

एकः, द्वौ, बहवः

अब प्रश्न यह आता है कि परीक्षा के किस तरह के प्रश्न-

प्रश्न (1) परीक्षा में सूत्र व्याख्या अर्थात् अर्थ पूछा जाएगा साथ ही उदाहरण पूछे जा सकते हैं।

प्रश्न (2) रूप सिद्धि पूछी जाएगी or जैसे -

⇒ (1) उच्चैः

इस स्थिति में "प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इस सूत्र से "उच्चैः" में प्रथमा विभक्ति हुई अतः प्रातिपदिकार्थमात्र के आधिक्य से

उच्चैः, रूप सिद्ध हुआ।

(2) कृष्णः

इस स्थिति में "प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इस सूत्र से प्रातिपदिकार्थ मात्र के आधिक्य होने से 'कृष्णः' में प्रथमा विभक्ति हुई अतः रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार से नीचैः, स्त्रीः और ज्ञानम् रूप बनेंगे।

⇒ **लिङ्गमात्रे**

जैसे- तटः, तटी, तटम्

इस स्थिति में "प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इस सूत्र से लिङ्गमात्र के आधिक्य होने से तटः, तटी, तटम् में प्रथमा विभक्ति होकर रूप सिद्ध हुआ।

जैसे-

⇒ द्रोणो व्रीहिः

इस स्थिति में "प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इस सूत्र से परिमाण मात्र के आधिक्य से "द्रोणो व्रीहिः" में प्रथमा विभक्ति होकर रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार एकः, द्वौ, बहवः उदाहरण →

इस स्थिति में "प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा" इस सूत्र से वचन मात्र के आधिक्य से एकः, द्वौ, बहवः में प्रथमा विभक्ति हुई और रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

① सूत्र

⇒ सम्बोधने च

अर्थ - सम्बोधन अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है।
जैसे - हे राम!

## द्वितीया विभक्ति

① सूत्र -

कर्तुरीप्सिततमं कर्म

अर्थ/व्याख्या :- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा रखता है वह कारक कर्म संज्ञक होता है।

② सूत्र -

कर्मणि द्वितीया

अर्थ/व्याख्या → अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
जैसे - हरिं भजति

यह हुई सूत्र की व्याख्या या अर्थ
अब परीक्षा में यदि रूप सिद्धि आती है तो ऐसा कहें -

हरिं भजति (हरि को भजता है)

उदाहरण में "कर्तुरीप्सिततमं कर्म" इस सूत्र से 'हरि' की कर्म संज्ञा हो जाती है और 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर 'हरिं भजति' रूप सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

३. सूत्र -

**अकथितं च ॥**

अर्थ - अकथित (अविवक्षित) कारक कर्म संज्ञक होता है।

व्याख्या - अपादानादि विशेष रूपों से अविवक्षित कारक कर्म संज्ञक होता है। तात्पर्य यह है कि जिस कारक की अपादान, सम्प्रदान, करण या अधिकरण आदि संज्ञा हो सकती है किन्तु वक्ता उसे अपादान, सम्प्रदान आदि के रूप में कहना नहीं चाहता (अकथित) और उसे कर्म में कहना चाहता है। उसकी कर्म संज्ञा हो जाती है। और जिसकी कर्म संज्ञा होती है उस में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। किन्तु यह विधान सर्वत्र नहीं हो सकता। यह निम्नलिखित 16 धातुओं या उनकी समानार्थक धातुओं में ही संभव है — यथा

① दुह् (दुहना) ② याच् (मांगना)
③ पच् (पकाना) ④ दण्ड् (सजा देना) ⑤ रुध् (रोकना)
⑥ प्रच्छ् (पूछना) ⑦ चि (चुनना) ⑧ ब्रू (बोलना)
⑨ शास् (शासन करना) ⑩ जि (जीतना) ⑪ मथ् (मथना)
⑫ मुष् (चुराना) ⑬ नी (ले जाना) ⑭ हृ (हरण करना)
⑮ कृष् (खींचना) और ⑯ वह् (ले जाना)

उपरोक्त 16 धातुओं या उनकी समानार्थक धातुओं के अपादान आदि कारकों के स्थान पर उनकी विवक्षा न होने पर कर्म कारक का प्रयोग होता है —

जैसे - गां दोग्धि पयः, बलिं याचते वसुधाम्
तण्डुलान् ओदनं पचति, गर्गान् शतं दण्डयति आदि

Scanned with CamScanner

अब प्रश्न यह आता है कि रूप सिद्धि कीजिए-
जैसे-

⇒ गां दोग्धि पयः

इस स्थिति में 'अकथितं च' इस सूत्र से 'गो' की कर्म संज्ञा हुई और "कर्मणि द्वितीया" सूत्र से कर्म में द्वितीया विभक्ति होकर गां दोग्धि पयः रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार से
⇒ बलिं याचते वसुधाम्

इस स्थिति में "अकथितं च" सूत्र से कर्म संज्ञा होकर "कर्मणि द्वितीया" सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई और बलिं याचते वसुधाम रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार से शेष सभी उदाहरण को सिद्ध / स्पष्ट करेंगे—

⇒ तण्डुलान् ओदनं पचति
⇒ गर्गान् शतं दण्डयति
⇒ व्रजं अवरुणद्धि गाम्
⇒ माणवकं पन्थानं पृच्छति
⇒ वृक्षं अवचिनोति फलानि
⇒ माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा
⇒ शतं जयति देवदत्तम्
⇒ सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति
⇒ देवदत्तं शतं मुष्णाति
⇒ ग्रामम् अजां नयति, आदि

# कर्तृ संज्ञा सूत्र

सूत्र ⇒ स्वतन्त्रः कर्ता

अर्थ - क्रिया में जिसे स्वतन्त्र कहा जाए उसे कर्त्ता कहते हैं।

## ⇒ तृतीया विभक्ति

### करण संज्ञा विधायक सूत्र

सूत्र ① ⇒ साधकतमं करणम्

अर्थ - क्रिया की सिद्धि में जो सब से प्रकृष्ट उपकारक अर्थात् सर्वाधिक सहायक कारक हो उसकी करण संज्ञा होती है। जैसे - रामेण बाणेन हतो वाली (राम ने बाण से बाली को मारा) यहाँ बाण के व्यापार के अनन्तर ही हनन क्रिया होती है, इसलिए यह प्रकृष्ट उपकारक है अतः इसकी करण संज्ञा होती है।

सूत्र ② ⇒ कर्तृ-करणयोस्तृतीया

अर्थ - अनुक्त कर्त्ता और करण में तृतीया विभक्ति हो। यथा - रामेण बाणेन हतो बाली (राम ने बाण से बाली को मारा)

रूप सिद्धि - रामेण बाणेन हतो बाली

इस स्थिति में यहाँ "साधकतमं करणम्" इस सूत्र से करण संज्ञा हुई एवं "कर्तृ-करणयोस्तृतीया" इस सूत्र से तृतीया विभक्ति होकर रामेण बाणेन हतो बाली रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

# चतुर्थी विभक्ति

## सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र

① सूत्र –

कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥

अर्थ / व्याख्या –

कर्ता दान क्रिया के कर्म के द्वारा जिस से सम्बन्ध करना चाहता है वह सम्प्रदान संज्ञक हो। अभिप्राय यह है कि क्रिया के उद्देश्य को सम्प्रदान कहा जाता है।

② सूत्र –

चतुर्थी संप्रदाने

अर्थ – सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।
जैसे – "विप्राय गां ददाति" (ब्राह्मण को गौ देता है)

रूप सिद्धि –

विप्राय गां ददाति

इस स्थिति में यहाँ कर्ता दान क्रिया के कर्म गौ के द्वारा विप्र के साथ सम्बन्ध करना चाहता है अर्थात दान क्रिया का उद्देश्य विप्र है, अतः "कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानम्" इस सूत्र से विप्र की सम्प्रदान संज्ञा हुई और "चतुर्थी संप्रदाने" सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर विप्राय गां ददाति रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

3. सूत्र - नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं वषट्योगाच्च ॥

अर्थ- नमस्, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, एवं वषट् अव्यय शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा — हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति आदि ॥

रूप सिद्धि

हरये नमः

उक्त स्थिति में "नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं वषट्योगाच्च" इस सूत्र के नमः के योग में हरये में चतुर्थी विभक्ति हुई तो हरये नमः रूप बना।

प्रजाभ्यः स्वस्ति

इस अवस्था में "नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं वषट्योगाच्च" इस सूत्र से स्वस्ति के योग में प्रजाभ्यः में चतुर्थी विभक्ति होकर प्रजाभ्यः स्वस्ति रूप सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार के शेष उदाहरण भी तरह सिद्ध होंगे जैसे —

⇒ अग्नये स्वाहा (अग्नि के लिये देता हूँ।)
⇒ पितृभ्यः स्वधा (पितरों के लिये देता हूँ।)
⇒ दैत्येभ्यो हरिः अलम् (हरि दैत्यों के लिए काफी है)
⇒ इन्द्राय वषट् (इन्द्र के लिए आहुति है)

Scanned with CamScanner

# पञ्चमी विभक्ति

① सूत्र - ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥

अर्थ- किसी व्यक्ति या वस्तु के अलग होने में जो कारक ध्रुव अर्थात् - सीमा (अवधि) रूप है वह अपादान कहलाता है। अभिप्राय यह है कि जब दो वस्तुओं का विश्लेष (अलग होना) होता है, तब जो वस्तु अपनी जगह से हटती नहीं, दूसरे शब्दों में जिस वस्तु से कोई वस्तु अलग होती है, उसे अपादान कहते हैं।

② सूत्र - अपादाने पञ्चमी ॥

अर्थ - अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे - ग्रामाद् आयाति, धावतो अश्वात् पतति आदि।

रूप सिद्धि ⇓

ग्रामाद् आयाति (गाँव से आता है)

यहाँ ⇒ कहाँ से वह आता है? गाँव से। अतः वह गाँव से अलग होता है, किन्तु गाँव अपने ही स्थान पर स्थिर है। यहाँ गाँव अवधिरूप है अतः "ध्रुवमपायेऽपादानम्" इस सूत्र से ग्राम की अपादान संज्ञा हो जाती है और "अपादाने पञ्चमी" सूत्र से ग्राम में पञ्चमी विभक्ति हो जाती है।

Scanned with CamScanner

## रूपसिद्धि

⇒ धावतोऽश्वात् पतति (दौड़ते हुए घोड़े से वह गिरता है)

यहाँ यद्यपि घोड़ा स्थिर नहीं, दौड़ता हुआ है तथापि गिरने वाला घोड़े से अलग होता है। घोड़ा पतन क्रिया के प्रति अवधि है। अत एव "ध्रुवमपायेऽपादानम्" सूत्र से 'अश्व' की अपादान संज्ञा होकर "अपादाने पञ्चमी" सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होती है।

Scanned with CamScanner